Volume: 4 Issue: 2 Pages: 40-42

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ% एक समालोचना

[*1] डॉ जीतेंद्र बैरवा

[*1] राजकीय महिला पॉलीटेक्निक महाविद्यालय भरतपुर, राजस्थान, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 6.876
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 17/Jan/2025
Accepted: 20/Feb/2025

***Corresponding Author**
डॉ जीतेंद्र बैरवा
राजकीय महिला पॉलीटेक्निक महाविद्यालय
भरतपुर, राजस्थान, भारत।

सारांश:
प्रस्तुत लेख अखंड भारत के अनन्य सेवक प्रखर राष्ट्रभक्त एवं समस्त हिंदू समाज को अपने गौरवशाली अतीत का स्मरण करानेवाले स्वयंसेवकों और नई पीढ़ी को संस्कारित करनेवाले महान् राष्ट्रवादियों को समर्पित है। यह संगठन भारतीय संस्कृति और नागरिक समाज के मूल्यों को बनाए रखने के आदर्शों को बढ़ावा देता है और बहुसंख्यक हिंदू समुदाय को मजबूत करने के लिए हिंदुत्व की विचारधारा का प्रचार करता है। संघ की सबसे बड़ी विशेषता उसकी कार्यप्रणाली है। संघ की वृद्धि का कारण भी यही है। इसी से यह अन्य संगठन और संस्थाओं से अलग है । बाकी संस्थाएँ धरना-प्रदर्शन, वार्षिकोत्सव, धर्मसभा आदि के माध्यम से काम करती हैं पर संघ की कार्यप्रणाली का केंद्र दैनिक शाखा और उसमें होनेवाले कार्यक्रम हैं। स्वयंसेवक की पहचान उसके राष्ट्रीय विचार और सद्व्यवहार से होती है किसी विशिष्ट वेश या बाहरी चिह्न से नहीं। संघ हिंदू समाज में नहीं, हिंदू समाज का संगठन है। इसलिए स्वयंसेवक समाज में बाकी सबकी तरह ही रहता है। देश में जब भी आपदा आई है संघ ने उल्लेखनीय कार्य किया है। जीवन के हर क्षेत्र में इस संगठन की उपस्थिति ध्यानाकर्षण करनेवाली है। इसी कारण सबको ऐसे विलक्षण संगठन को जानने-समझने की आकांक्षा रहती है। शिक्षा, सेवा, चिकित्सा, विज्ञान, विद्यार्थी, मजदूर, अधिवक्ता, राजनीति आदि समाज के प्रमुख क्षेत्रों में संघ की सार्थक उपस्थिति है। संघ की ऊर्जा का मूल स्रोत हैं दैनिक शाखा। शाखा ही संघ की बुनियाद है जिसके ऊपर आज यह इतना विशाल संगठन खड़ा हुआ है। यहां संक्षेप में यह बताया गया है कि संघ का सूत्रपात कब हुआ, इसका स्वरूप कैसा है, शाखा क्या है एवं इसके विभिन्न शिविरों की संकल्पना क्या है।

मुख्य शब्द: राष्ट्र जागरण] सांस्कृतिक राष्ट्रवाद] हिंदुत्व] धर्मनिरपेक्षता] आत्मीयता] राष्ट्र का पुनर्निर्माण

प्रस्तावा:

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक ऐसा नाम जो 2025 में एक सौ वर्ष का हो गया है। यह एक ऐसा नाम है जिसका जिक्र होते ही राजनीति के गलियारों की धड़कन बढ़ जाती है। समाज के भीतर कहीं ना कहीं देश के सबसे बड़े परिवार के तौर पर यह अपनी पहचान कराता है लेकिन सवाल यह नहीं है कि आर एस एस का मतलब सिर्फ शब्दों में गुम कर दिया जाए। आरएसएस सामाजिक संगठन है या राजनीतिक] सांस्कृतिक तौर पर काम करता है या फिर सत्ता पलटने बदलने की स्थिति से लेकर इस देश की सियासत को ले आता है। क्योंकि आरएसएस पर प्रतिबंध एक दौर में जिस रायसीना हिल्स से लगा था देखिए आज उसी रायसीना हिल्स पर आरएसएस काबिज है। BBC के अनुसार संघ विश्व का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संस्थान है और यह राष्ट्रजागरण के प्रयास में पूर्णतया सफल रहा है।

भारत ही नहीं दुनिया ने महात्मा गांधी जी की हत्या के बाद जाना कि हिंदू महासभा से इतर कोई दूसरा हिंदूवादी संगठन भी है जिसका नाम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ है क्योंकि हिंदू महासभा से ताल्लुक रखने वाले नाथूराम गोडसे ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की हत्या कर दी। गोडसे आरएसएस का सक्रिय सदस्य था लिहाजा उंगलियां हिंदुत्ववादि संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर उठी। तत्कालीन गृहमंत्री सरदार पटेल ने आरएसएस पर प्रतिबंध लगा दिया। सरसंघचालक गोलवलकर जी ने आरएसएस पर प्रतिबंध को लेकर अपनी आपत्ति जताई लेकिन नेहरू जी उस वक्त चाहते थे आरएसएस को हमेशा हमेशा के लिए बैन कर दिया जाए]S लेकिन सरदार वल्लभभाई पटेल ने सबूत के अभाव में ऐसा करने से मना कर दिया और जुलाई 1949 में RSS से बैन हटा लिया गया।

जब नेहरू जी ने RSS पर प्रतिबंध लगाया था तब यह उनका एक राजनीतिक फैसला था उसका सच्चाई से कोई वास्ता नहीं था क्योंकि तब सरदार पटेल जीवित थे। पटेल जी ने नेहरू जी को जो पत्र लिखा है उसमें लिखा है कि गांधी जी की हत्या में RSS का कोई रोल नहीं है। 18 जुलाई 1948 को पटेल जी ने हिंदू महासभा के सदस्य और अपने ही कैबिनेट के मंत्री और बाद में जनसंघ बनाने वाले श्यामा प्रसाद मुखर्जी को एक खत लिखा। यह बात आजादी के तुरंत बाद

की है 1948 एवं 1949 हिंदू राष्ट्रवाद का नारा लगाती RSS का अस्तित्व उस दौर में ही सवालों के घेरे में आ गया था । उम्र RSS की बेहद कम थी। हेडगेवार जी के बाद गुरु माधव सदाशिव गोलवलकर के हाथ में आरएसएस थी।

नेहरू जी चाहते थे कि आरएसएस पर प्रतिबंध हमेशा हमेशा के लिए लगा दिया जाए और सवाल यह भी उठा था कि आरएसएस सामाजिक सांस्कृतिक संगठन होने का आडम्बर कर रही है और राजनीतिक तौर पर देश के भीतर एक चुनौती बन रही है यह सारे सवाल थे इसका अपना कोई इतिहास इस रूप में कभी आया नहीं की कोई संविधान इस संगठन का कभी आया हो लेकिन सवाल फिर वही की राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का बीज निकला कैसे। 1907 का वह दौर था जब बंगाल में आजादी आंदोलन के लिए क्रांतिकारियों ने अनुशीलन समिति के नाम से एक संगठन खड़ा किया नागपुर से डाक्टरी की पढ़ाई करने आए केशव बलिराम हेडगेवार केशव इस संगठन का हिस्सा बने और जेल भी गए। दादाभाई नौरोजी ने उस वक्त गर्म सोच के नायक तिलक जी को कांग्रेस में आने का न्योता दिया तो डॉक्टर हेडगेवार जी भी कांग्रेस में उनके साथ ही आ गए डॉक्टर हेडगेवार कांग्रेस के साथ काम कर रहे थे लेकिन लेकिन 1917 में तुर्की के खलीफा की कुर्सी छीने जाने के विरोध में हिंदुस्तान में खिलाफत आंदोलन की आवाज बुलंद हुई और गांधी जी की अगवाई में कांग्रेस ने इसका समर्थन किया केशव बलिराम हेडगेवार को यह बात चुभी और उन्होंने इसे मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति करार दिया लेकिन कांग्रेस का हिस्सा वह बने रहे। लेकिन डॉक्टर हेडगेवार ने यह मन बना लिया था कि हिन्दुत्ववादी सोच के साथ एक अलग संगठन तैयार करेंगे। शुरुआत घर से हुई] शुरू में उनको सुनने के लिए केवल 12 लोग ही आए लेकिन 12 से 1200 और 1200 से 12 लाख स्वयंसेवक बनने में समय नहीं लगा और संघ का रास्ता भारतीय मन में घर करने लगा। हेडगेवार जी के लिए एक नई सोच के साथ संगठन शुरू करना आसान नहीं था लेकिन उन्होंने खुद शाखा लगाना शुरू किया। शुरुआत में कुछ लोग उनकी विचारधारा से प्रभावित होकर तो कुछ लोग कौतूहलवश शाखा में आने लगे। शाखा में सूर्य नमस्कार] योग] खेलकूद] लाठी प्रशिक्षण के साथ बौद्धिक चर्चा को भी शामिल किया गया। धीरे-धीरे शाखा में आने वाले स्वयंसेवकों की संख्या बढ़ती चली गई। हेडगेवार जी ने संघ का गठन एक अनुशासित कैडर के रूप में किया ।

1925 में डॉ- हेडगेवार ने नागपुर में विजयदशमी के दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की बुनियाद रख दी। शीघ्र ही आरएसएस का विस्तार पुणे] यवतमाल] अमरावती] नासिक के साथ मध्य भारत में होता चला गया। यह एक ऐसा परिवर्तन था जिसकी बुनियाद तो सामाजिक थी लेकिन भविष्य में राजनीति का ताना-बाना भी इसी के इर्द-गिर्द बुना जाना था। लेकिन संघ विस्तार के लिए तैयार था और महाराष्ट्र के बाहर विस्तार का मौका तब मिला जब 1930 के आसपास डॉक्टर हेडगेवार बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी आए और और पंडित मदन मोहन मालवीय ने बीएचयू परिसर में संघ का कार्यालय खोलने की इजाजत दी। बीएचयू में ही डॉक्टर साहब की मुलाकात माधवराव गोवेलकर से हुई। गोवलकर जी बीएचयू में रहकर एमएससी की पढ़ाई कर रहे थे और पढ़ाते भी थे लिहाजा उन्हें गुरुजी कहकर संबोधित किया जाता था। गोलवलकर डॉक्टर साहब के जरिए आरएसएस से सक्रिय रूप से जुड़ गए । 1940 में डॉक्टर साहब का निधन हो गया और सबकी सहमति से आरएसएस की कमान गोवलकर जी के पास आ गई। संघ का विस्तार शुरू हुआ। ना सिर्फ दिल्ली लाहौर चेन्नई कोलकाता बल्कि समूचे देश में आरएसएस फैल रहा था ।

सवाल यह था कि हिंदू सामाजिकता का स्वरूप लेकर संघ जो चला है क्या उन सबके बीच हर तबका शामिल है यकीनन नही, दलित चेतना बिल्कुल अलग सोचती है। यह अलग मसला है कि गांधी जी हो या डॉ. अंबेडकर संघ के शिविर में पहुंचे जरूर लेकिन संयोग देखिए जिस विजय दशमी के दिन स्थापना हुई आरएसएस की, उसी दिन धम्मचक्र प्रवर्तन दिवस भी बाबासाहेब अंबेडकर ने नागपुर में ही विजयदशमी के दिन ही मनाया। और दो धाराएं अपने-अपने तरीके से चल पड़ी। न सिर्फ डॉक्टर हेडगेवार बल्कि गोलवलकर जी के सामने एक संकट यह जरूर रहा कि सामाजिक तौर पर सबको कैसे जोड़े। डॉक्टर हेडगेवार ने एक सपना देखा था हिंदुस्तान को गड़ने का - हिंदू राष्ट्रवाद का सपना। और संयोग देखिए 3 अक्टूबर 2014 विजयदशमी का ही दिन और सरसंचालक मोहन भागवत जी ने माना कि उन्हें भारत का नायक मिल चुका है यानी जिस सपनों के भारत का जिक्र कभी डॉक्टर हेडगेवार ने किया था उस सपने को पूरा करने के लिए नायक के तौर पर नरेंद्र मोदी जी का जिक्र खुले तौर पर संघ ने किया। राजनीतिक सक्रियता की अद्भुत मिशाल आरएसएस.. यह कारवाँ अभी और आगे जाएगा।

नरेंद्र मोदी जी जब से देश के प्रधानमंत्री बने, जितनी चर्चा मोदी जी की हुई उतनी ही चर्चा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भी हुई। विदेश में बड़े-बड़े लेख लिखे गए। संघ के बारे में दुनिया को परिचय कराया गया। लेकिन क्या हम हिंदुस्तानी इससे ठीक से परिचित हो पाए, संघ को यदि समझना है तो एक ही चीज कहना चाहूंगा संघ क्या है ? मनुष्य निर्माण की एक संस्कारित, ध्येयनिष्ठ और सतत राष्ट्र के बारे में सोचनेवाला, राष्ट्र एवं समाज की नि:स्वार्थ सेवा मे समर्पित, जो व्यक्तित्व निर्माण की प्रयोगशाला है वही संघ है। मूल यह है कि हमें राष्ट्रनिर्माण के लिए ऐसे स्वयंसेवकों की श्रृंखलाबद्ध कड़ी की आवश्यकता है जो राष्ट्र के बारे में सोचे, जो सिर्फ और सिर्फ राष्ट्रहित को वरीयता दे। सरसंघचालक डॉ. भागवत जी कहते हैं हिंदुत्व की विचारधारा सबके प्रति प्रेम, आत्मीयता और विश्वास का संदेश देती है। यहां देश सर्वोपरि है। किसी के प्रति द्वेष व विरोध हिंदुत्व नहीं है। हिन्दुत्व कोई कर्मकांड भी नहीं है। यह आध्यात्म और सत्य पर आधारित दर्शन है। यह भारत की एकता, अखण्डता को अक्षुण्ण रखते हुए भारत को परम वैभव पर पहुँचाने के लिए अग्रसर है। केवल दुर्बल रहना भी हिन्दुत्व नहीं है। स्वयंसेवकों को समाज की सेवा भगवान मानकर करनी है। समाज हमारा भगवान है। हम समाज की सेवा करने वाले लोग हैं। मुझे इसके बदले में क्या मिलेगा, इसके बारे में सोचना भी नहीं। हम हिन्दू राष्ट्र के सम्पूर्ण विकास के लिए कार्य करेंगे। हम यह काम कर रहे हैं, यह अभिमान भी हममें नहीं आना चाहिए।

भारत एक पुरातन राष्ट्र है। हमारे पूर्वजों ने इस राष्ट्र का निर्माण किया है, अपनी तपस्या से इसको पोषित किया है एवं सांस्कृतिक रूप से इसे परिष्कृत किया है। और सनातन हमारा धर्म है और उस धर्म से हमारी संस्कृति पल्लवी पुष्पित हुई है। इसलिए हम इसको सनातन संस्कृति कह दे, सनातन धर्म कह दे, सनातन सभ्यता कह दे या हिंदू सभ्यता कह दे, कोई फर्क नहीं पड़ता है। सब एक ही है। फर्क इतना ही है कि यह हिंदू राष्ट्र है, इसको बनाना नहीं है, बल्कि बचाना है। अब यह हिंदू राष्ट्र बचेगा कैसे ? यह बचेगा तभी जब यहां हिंदू बहुसंख्यक रहेंगे। जिस समय हिंदू बहुसंख्यकता खत्म हो जाएगी यह हिंदू राष्ट्र नहीं रह पाएगा। और यह हिंदू राष्ट्र बचेगा ? कैसे हिंदू राष्ट्र को हम परम वैभव तक कैसे ले जा सकते हैं ? भारत विश्व गुरु बनेगा कैसे ? एवं सनातन संस्कृति कब पुष्पित एवं पल्लवित होगी ? यह सारे प्रश्न हैं, जिनका हल एक ही हल है - वह है हिंदुओं का संगठित होकर सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को बढ़ावा देना।

"राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ गत 99 वर्षों से सतत राष्ट्र के पुनर्निर्माण एवं समाज की सेवा में संलग्न है। राष्ट्रीय सुरक्षा, एकता] अखंडता एवं प्राकृतिक आपदा के समय में समाज को साथ लेकर संघ के योगदान के चलते समय-समय पर देश के विभिन्न प्रकार के नेतृत्व ने संघ की भूमिका की प्रशंसा भी की है। अपने राजनीतिक स्वार्थों के चलते तत्कालीन सरकार द्वारा शासकीय कर्मचारियों को संघ जैसे रचनात्मक संगठन की गतिविधियों में भाग लेने के लिए निराधार ही प्रतिबंधित किया गया था।शासन का वर्तमान निर्णय समुचित है और भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था को पुष्ट करने वाला है।" (उद्धृत)

निष्कर्ष:

सांप्रदायिक हिंदूवादी, फ़ासीवादी और इसी तरह के अन्य शब्दों से पुकारे जाने वाले संगठन के तौर पर आलोचना सहते और सुनते हुए भी संघ को कम से कम 7-8 दशक हो चुके हैं। दुनिया में शायद ही किसी संगठन की इतनी आलोचना की गई होगी, वह भी बिना किसी आधार के। जबकि संघ के स्वयंसेवकों का यह कहना है कि सरकार एवं देश की अधिकांश पार्टियाँ अल्पसंख्यक तुष्टीकरण में लिप्त रहती हैं। विवादास्पद शाहबानो प्रकरण एवं हज-यात्रा में दी जानेवाली सब्सिडी इत्यादि सरकारी नीति उसके अनुसार इसके प्रमाण हैं। संघ का यह मानना है कि ऐतिहासिक रूप से हिंदू स्वदेश में हमेशा से ही उपेक्षित और उत्पीड़ित रहे हैं और यह सिर्फ़ हिंदुओं के जायज अधिकारों की ही बात करता है जबकि उसके विपरीत उसके आलोचकों का यह आरोप है कि ऐसे विचारों के प्रचार से भारत की धर्मनिरपेक्ष बुनियाद कमज़ोर होती है। संघ की इस बारे में मान्यता है कि हिन्दुत्व एक जीवन पद्धति का नाम है, किसी विशेष पूजा पद्धति को मानने वालों को हिन्दू कहते हों ऐसा नहीं है। हर वह व्यक्ति जो भारत को अपनी जन्म-भूमि मानता है, मातृ-भूमि व पितृ-भूमि मानता है (अर्थात् जहाँ उसके पूर्वज रहते आये हैं) तथा उसे पुण्य भूमि भी मानता है (अर्थात् जहां उसके देवी देवताओं का वास है); हिन्दू है। संघ की यह भी मान्यता है कि भारत यदि धर्मनिरपेक्ष है तो इसका कारण भी केवल यह है कि यहां हिन्दू बहुमत में हैं। और सामाजिक परिवर्तन से ही व्यवस्था में परिवर्तन आता है इसके लिए पहले आध्यात्मिक जागरण की आवश्यकता होती है। आक्रांताओं ने जब भारत पर आक्रमण किया तब संतों ने ही स्वयंसेवकों की भांति आध्यात्मिक जागरण कर लोक में निर्भरता का भाव जगाया। संघ की मूल दृष्टि वसुधैव कुटुम्बकम् की है। यह सामाजिक समरसता का बोध कराता है। संस्कार, समर्पण भाव एवं सामाजिक एकरूपता का मूल संघ परिवार है। पितृ वचन का पालन करने वाले श्री राम आदर्श हैं एवं स्वयंसेवक इन्हीं आदर्श का अनुसरण करते हुए राष्ट्र जागरण के पथ पर अग्रसर है।

सन्दर्भ सूची:

1. मोदी, नरेंद्र (2006) श्री गुरु जी एक स्वयंसेवक, प्रभात प्रकाशन दिल्ली.
2. वैद्य, मा.गो (2019). राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का परिचय, झंडेवाला, नई दिल्ली.
3. ठेगड़ी, द.बा. (2011). राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कार्यकर्ता, पुणे.
4. ठाकुर, नरेंद्र (2023). राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का दृष्टिकोण, फरोस मीडिया एंड पब्लिकेशन, नई दिल्ली.
5. इस्लाम, शमशुल (2018). स्वतंत्रता आंदोलन और आरएसएस, ओखला नई दिल्ली.
6. इस्लाम, शमशुल (2019). गोलवलकर की हम या हमारी राष्ट्रीयता की परिभाषा, ओखला, नई दिल्ली.
7. आनंद, अरुण (2020). सरसंचालक, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली.
8. भागवत, मोहन (2020), यशस्वी भारत, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली.
9. नूरानी, ऐ.जी (2020). द आरएसएस, Leftword Books Pub. नई दिल्ली.
10. अंबेडकर, सुनील (2019).The RSS Roadmaps for the 21st Century, Rupa Pub.नई दिल्ली.